Wisdom Vortex:
International Journal of Social Science and Humanities

Bi-lingual, Open-access, Peer Reviewed, Refereed, Quarterly Journal

e-ISSN: 3107-3808
p-ISSN: Applied for

Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities, Volume: 02, Issue: 01, Apr-Jun 2026

How to cite this paper:
Yadav, V. K., and Kumari, S. (2026). Bharatiya Naari ke Prati Swami Vivekanand ke Vichar. *Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities, 01*(04), 41-44. https://doi.org/10.64429/wvijsh.02.01.018

Received: 09 Mar. 2026
Accepted: 24 Mar. 2026
Published: 10 Apr. 2026

Copyright © 2026 by author(s) and Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities.
This work is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY- 4.0).
https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भारतीय नारी के प्रति स्वामी विवेकानंद के विचार

विवेक कुमार यादव[1]
डॉ० सरिता कुमारी[2]

सारांश

19वीं सदी के उत्तरार्द में जिस समय स्वामी विवेकानंद का जन्म हुआ था उस समय स्त्रियों की दशा अत्यंत दयनीय थी। इसका मुख्य कारण अशिक्षा, बालविवाह पर्दाप्रथा सत्ती प्रथा जैसे प्रचलित कुरीतियों समाज में व्यापक रूप से प्रचलित थे। स्वामी विवेकानंद स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। स्त्री शिक्षा के विषय में स्वामी विवेकानंद का विचार उदार था उनके लिए स्त्री तथा पुरूष दोनों को शिक्षा के पक्षधर थे। स्वामी विवेकानंद देश के कल्याण के लिए आधी आबादी के लिए शिक्षा को जरूरी मानते थे। वह समस्त भारतवासी में भगवान श्री रामचन्द्र तथा माता सीता के जीवन को आर्दश मानते थे। समस्त बालिका सीता के भव्य आदर्श की आराधना करती है। तथा भारतवर्ष के प्रत्येक स्त्री की यह आकांक्षा है कि वह अपने जीवन को भगवती सीता के समान पवित्र, भक्तिपूर्ण और सर्वसह बनाये। यहाँ तक भारत में कोई गुरू अथवा संत जब किसी स्त्री को आशीर्वाद देते है तो कहते है ''तुम सीताजी के समान बनो'' और किसी बलिका को आशीर्वाद देते है तब भी यह कहते है कि सीता का अनुकरण करो। भगवती सीता जी को पद-पद पर यातनाएँ तथा कष्ट मिलते रहे परन्तु उनके मुख से रामचन्द्र के प्रति एक भी कठोर शब्द नहीं निकाले। वह सभी विपतियों और कष्टो का वे कर्त्तव्य-बुद्धि से स्वागत करती रही तथा उसे भली भाँति निभाती रही है। यही सच्चा भारतीय आदर्श है। स्त्री हमेशा से ही पारिवारिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्थाओं समाज में महिलाओं की स्थिति जितनी सशक्त तथा प्रभावशाली होना चाहिए वह अभी भी पूर्ण रूप से नही हो पाया है। भारतीय संविधान में भी महिलाओं को पुरूष के समान अधिकार दिये गये है। फिर भी उनका शोषण किया जाता है। आज हम भले ही 21वीं सदी में पहुँच गए है लेकिन स्त्रियों के प्रति हमारी मानसिकता आज भी पुरानी ही रह गई है। इस शोध में स्वामी विवेकानंद भारतीय नारी के प्रति अपने विचार को प्रस्तुत किये है क्योंकि स्वामी विवेकानंद राष्ट्र के प्रगति में महिलाओं की उपयोगिता को महत्त्वपूर्ण मानते है उनका कहना है कि हमें महिलाओं की ऐसी अवस्था में ला देना है कि वह अपनी समस्याओं को अपने अनुसार स्वयं सुलझा सके। जो समाज के उत्थान तथा कल्याण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

विशिष्ट शब्द: *स्त्री शिक्षा, स्त्री की स्थिति, महिलाओं की उपयोगिता, कल्याणकारी*

[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
[2] सहायक प्रध्यापिका, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, मारवाड़ी कॉलेज, राँची

स्वामी विवेकानंद चाहते है कि भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दिया जाना चाहिए कि जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपना कर्त्तव्य को पूर्ण रूप से निभा सके। तथा संघ मित्रा, लीला अहिल्याबाई और मीराबाई आदि भारत के इन मुख्य महान देवियों द्वारा चलायी गयी परम्परा को आगे बढ़ा सके। भारत की स्त्रियाँ को पवित्रता तथा त्याग की मूर्त्ति है क्योंकि उनके पास वह बल और शक्ति है, जो सर्व शक्तिमान परमात्मा के चरणों में सम्पूर्ण आत्म समर्पण प्राप्त होती है। स्वामी विवेकानंद का दृढ़ विश्वास है कि धर्म ही शिक्षा का मेरूदण्ड है।

हे भारत! तुम मत झूलना कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री दमयन्ती है। स्वामी विवेकानंद भारतवर्ष में स्तित्व मातृत्व का बोधक मानते हैं। मातृत्व को महानता तथा निःस्वार्थता कष्ट-सहिष्णुता तथा क्षमाशीलता का भाव में निहित मानते हैं। वह भारत के नारी में ईश्वर की साक्षात अभिव्यक्ति है। तथा उनका मानना है उनका समस्त जीवन इस विचार से ओतप्रोत है कि वह माँ है, पूर्ण माँ बनने के लिए उसे पतिव्रता रहना आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद प्रत्येक स्त्री के लिए अपने पति को छोड़कर अन्य कोई भी पुरूष पुत्र पत्नी को छोड़कर अन्य सभी स्त्रियाँ माता के समान होनी चाहिए। तथा हम स्त्री है या पुरूष हमें यह न सोचकर यह सोचना चाहिए कि हम मानव है जो एक दूसरे की सहायता करने और एक दूसरे के काम आने के लिए जन्म लिये हैं।

स्वामी विवेकानंद भारत में दो बड़ी बुरी बातें बताते हैं जिसमें स्त्रियों का तिरस्कार तथा गरीबों को जाति भेद के द्वारा भेदभाव। अमेरिका के पुरूष अपनी स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं इसलिए ये सुखी, विद्वान, स्वतंत्र तथा उद्योगी है। दूसरी ओर हम भारत के लोग स्त्री जाति नीच, अधम परम हेय तथा अपवित्र कहते हैं इसलिए हमलोग पशु, दास उधमहीन और दरिद्र हो गये हैं। कर्त्तव्य में यह समझना इतना कठिन है कि इस देश में पुरूष तथा स्त्रियों के बीच इतना भेद क्यों किया जाता है। वेदांत शास्त्र में तो कहा है कि एक ही चैतन्य सत्ता सर्वभूतों में विद्यमान है तुमलोग स्त्रियों की निन्दा ही करते हैं। तथा उनकी उन्नति के लिए तुमने क्या किया है कुछ भी नहीं बोल सकते हो। आत्मा में भी क्या कही लिंग-भेद है? स्त्री तथा पुरूष का भाव दूर करो सब आत्मा है।

स्वामी विवेकानंद कहते है कि जब तक अपने देश की महिलाओं की अवस्था को नहीं सुधार सकते हो सकते हो तब तक कुम्हार कल्याण की आशा भी नहीं की जा सकती हैं नहीं तो तुम ऐसे ही पिछड़े रह जाओगे। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि स्त्री में जो दिव्यता निहित हैं उसे हम कभी ठग नहीं सकते हैं। वह न कभी ठगी गयी है न ठगी जाएगी। यह सदैव अपना प्रभाव जमा लेती है तथा सदैव ही अचूक रूप से बेईमानी ताा ढोंग को पहचान लेती है। स्वामी जी कहना है कि स्त्रियों की दशा सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। अर्थात पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है। इसलिए रामकृष्ण-अवतार में ''स्त्री-गुरू'' को ग्रहण किया गया है। इसलिए उन्होंने स्त्री वेश तथा स्त्री भाव में साधना की ओर इसी कारण उन्होंने नारियों के मातृभाव में जगदम्बा के रूप का दर्शन करने का उपदेश दिया। स्वामी विवेकानंद का विचार है कि स्त्रियों के लिए मठ स्थापित करने का है। इस मठ से गार्गी और मैत्रेयी तथा उनसे अधिक योग्यता रखने वाली स्त्रियों की उत्पत्ति होगी। उन्होंने स्वामी रामकृष्ण के विचारों का समर्थन किया। उनका कहना था किसी भी जाति की या कैसी भी स्त्री क्यों न हो वह बालिकाओं के लिए गाँव-गाँव में पाठशालाएँ खोलकर उन्हें शिक्षित करने के लिए कहते हैं। क्योंकि स्त्रियों जब शिक्षित होगी तभी तो उनकी सन्तानों के द्वारा देश का मुख उज्जवल होगा और देश में विधा, ज्ञान शक्ति भक्ति जाग उठेगा।

स्त्री की दशा पर विचार व्यक्त करते समय स्वामी विवेकानंद ने यह आशा व्यक्त करते हैं कि स्वयं में ऐसे आश्रम का मनुष्य हूँ जहाँ विवाह नहीं किया जाता है। अतः स्त्री के विषय में मेरा ज्ञान आपूर्ण भी हो सकता है, भारत देश की विशालता तथा मानव वंश की विविधता भी इस विषय पर सर्वमान्य मत स्थापित करने में बाधक बनती है। किन्तु एक धर्म प्रचारक होने के कारण भारत के स्त्रियों के बारे में जानने का साधारणतया अधिक अवसर भी प्राप्त हुआ है। स्वामी विवेकानंद एक परिव्राजक के रूप में प्राप्त जो अनुभव के आधार पर स्त्री जाति की आदर्शता व दुर्दशता को विश्व के सामने ला रखे हैं।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि भारत में सभी जातियाँ स्त्रियों की पूजा करके ही बड़ी बनी है। जिस देशों में स्त्रियों की पूजा नहीं किया जाता वह देश वह जाति कभी भी बड़ी नहीं हो सकती है। विश्व के समक्ष भारतीय नारियों की गौरवमयी संस्कृति का विवरण प्रसार करते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि पविप्रय और स्तीत्व भारतीय नारी जाति का आदर्श है। जो उसे अतीत की परम्परा से प्राप्त हुआ है, परन्तु आज हमें इसी आदर्श के प्रति श्रद्धा सम्मान और भक्ति प्रदर्शन करनी चाहिए। फलस्वरूप नारियों का चरित्र और भी अधिक बलवान तथा सुदृढ़ होगा। इस तरह होने से वे अपनी आत्म सम्मान तथा पवित्रता तथा स्तीत्व का रक्षा करना धर्म समझेंगी।

स्वामी विवेकानंद पाश्चात्य राष्ट्रों में भी महिलाओं की विशिष्टता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि अमेरिका के समान सुसंस्कृत और शिक्षित स्त्रियों संसार मे अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती है। स्वामी विवेकानंद को अमेरिका में भी साहस करने वाली

स्त्रियों से भेट हुआ जिसका हृदय हिमखण्ड की तरह शुद्ध तथा निष्कलंक पाया। वे ऐसी स्त्री थी जिसके हाथों में सभी सामाजिक और नागरिक कर्त्तव्यों की बागडोर थी। अमेरिका की पाठशाला और विद्यालय दोनों में स्त्रियों से भरा हुआ था वहाँ के पुरूष भी स्त्रियों के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करते थे। इसी कारण यह प्रगतिशील राष्ट्र बन गया।

अमेरिका में बालिकाओं का जीवन अत्याधिक शुद्ध पवित्र और सरल है। 20-25 वर्ष के पहले यहाँ पर कुछ ही स्त्रियों का विवाह होता है और वे आकाश में पक्षियों की भाँति स्वतंत्रता से विचरण करती है। वे बाजार शालाओं और महा विद्यालयों में जाती हैं। जबकि भारत में यह स्थिति बिल्कुल भिन्न है, यहाँ नियमित रूप से कन्याओं का विवाह ग्यारह वर्ष की आयु में कर दिया जाता है। जिससे वे कहीं भ्रष्ट या चरित्रहीन नहीं हो जाये।

स्वामी विवेकानंद का कहना है कि ‘‘यदि भारतीय महिला को बौद्धिक प्रगति हो तो हमें बड़ी खुशी होगी जैसा कि अमेरिका में हुआ है। भारत में उन्नति अभीष्ट के समान है, जबकि वह पवित्र जीवन तथा स्तित्व को अक्षुण्य बनाये रखते है। भारत में नैतिकता तथा आध्यात्मिक प्रगति को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। भारतीय स्त्रियों अमेरिकी स्त्रियों की भाँति सुशिक्षित नहीं होती है फिर भी उनका व्यवहार तथा विचार में पवित्रता होती है।[2]

स्त्रियों को बहुत सी कठिन समस्याएँ है पर उनमें एक भी ऐसी नहीं जो उस जादू भरे शब्द ‘शिक्षा के द्वारा हल न हो सके।’ मनु महाराज ने पुत्रियों का लालन-पालन और शिक्षा उतनी ही सावधानी और तत्परता से होनी चाहिए जितनी पुत्रों की जैसे पुत्रों का विवाह तीस वर्ष की आयु तक ब्रह्मचार्य पालन के पक्षात् होना चाहिए उसी प्रकार पुत्रियों को भी ब्रह्मचार्य-पालन करना चाहिए तथा उन्हें भी माता-पिता द्वारा शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए। स्त्रियों को ऐसी अवस्था में रखना चाहिए कि वे अपनी समस्याओं को अपने तरीके से हल कर सके। स्त्री शिक्षा का विस्तार धर्म को केन्द्र बनाकर करना चाहिए धर्म के अतिरिक्त दूसरी शिक्षाएँ गौण होंगी। धार्मिक शिक्षा चरित्र गठन ब्रह्मचार्य पालन इन्हीं की ओर ध्यान देना चाहिए भारत वर्ष की स्त्रियों को सीता के पदचिन्ह् का अनुसरण करके अपनी उन्नति करनी चाहिए। सीता का चरित्र अनुपम है। वह सच्ची भारतीय स्त्री की जीति जागती प्रतिमा है। क्योंकी पूर्ण विकसित नारीबध के समस्त भारतीय आदर्श सीता के ही चरित्र से उत्पन्न हुए हैं। यह महा महिमामयी सीता स्वयं शुद्धता से भी शुद्ध सहिष्णुता की परमोच्च आदर्श सीता आर्यावर्त्त के इस विस्तृत भूमिखण्ड में सहस्त्रों वर्ष से अबालवृद्ध वनिता की आराध्या बनी हुई है।

इस युग की वर्त्तमान आवश्यकताओं का अध्ययन करने र यह आवश्यक दिखता है कि उनमें कुछ की वैराग्य के आदर्श की शिक्षा दी जाए जिससे वे युग-युगान्तर से अपने रक्त में संजात ब्रह्मचर्यरूप सद्गुण की शक्ति द्वारा प्रज्जवलित होकर आजीवन कुमारीव्रत का पालन करें। हमारी जन्मभूमि को अपनी समुचित के लिए अपनी कुछ सन्तानों को विशुद्धात्मा ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी बनाने की आवश्यकता है। स्वामी जी मानना है कि यदि स्त्रियों में एक भी ब्रह्मज्ञानी हो गयी, तो उसके व्यक्तित्व के तेज से सहस्त्रों स्त्रियों स्फूर्ति प्राप्त करेगी और सत्य के प्रति जागृत हो जाएँगी। इससे देश और समाज का बड़ा उपकार होगा।

स्वामी विवेकानंद शिक्षा के क्षेत्र में एक नयी शिक्षा व्यवस्था की बात करते है जब वे कहते है कि बालक और बालिकाओं दोनों को शिक्षा की जरूरत है। पुरूषों के लिए जैसे शिक्षा केन्द्र है वैसे ही स्त्रियों के निमित भी बालिका विद्यालय या महिला विद्यालय स्थापित करने होंगे और इन विद्यालय में शिक्षा देने का अधिकार सिर्फ स्त्री शिक्षिकाओं को ही होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद के अनुसार स्त्री को पुराण, इतिहास, गृहकार्य, शिल्प और गृहस्थी के सारे नियम वर्त्तमान विज्ञान की सहायता से सिखाने होंगे, और आदर्श चरित्रगठन के लिए उपर्युक्त आचरण की भी शिक्षा देनी होगी। कुमारियों को धर्म-परायण और नीति परायण बनाना पड़ेगा। जिससे कि वे भविष्य में अच्छी गृहिणिर्या हो।[3]

स्वामी विवेकानंद स्त्रियों की दयनीय स्थिति के प्रति बड़े सचेत थे। स्त्री शिक्षा के संदर्भ में स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा पर इन्होंने विशेष बल दिया शिक्षा के द्वारा स्त्रियों को आत्म निर्भर बनाने के संबंध में उनका कहना है कि ‘‘प्राचीन कलाओं को पुनरूज्जीवित करों अपनी लड़कियों को खोये के फलों से नमूने बनना सिखाओ। उन्हें कलात्मक पाक क्रिया और सीना विरोना सिखाओ। उन्हें चित्रकला फोटोग्राफी सोने, चांदी, कागज जरी और कसीदाकारी पर चित्र बनाने की शिक्षा दो। इसका ध्यान रखो कि प्रत्येक को किसी न किसी ऐसी कला का ज्ञान हो जाये जिसके द्वारा आवश्यकता पड़ने पर वे अपनी जीविका अर्जन कर सके।[4]

परिश्रम देश कि स्त्रियों की शिक्षा स्वतंता और उनकी कर्म कुशलता को देखकर स्वामी विवेकानंद भारत की स्त्रियों की अशिक्षा अज्ञानता और घर की चारदीवारी में कैद उनके जीव के बारे सोच कर व्यक्ति हो जाते हैं। स्त्रियों की शिक्षा, स्वतंत्रता पर इनका कहना है कि ‘‘पहले स्त्रियों को उचित शिक्षा दो फिर उन्हें इतनी स्वतंत्रता दो कि वे अपने जीवन संबंधी निर्णय खुद ले सके उन्हंे अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता दो, फिर वे तुम्हें खुद ही बतायेंगी कि उन्नति के लिए कौन-कौन से सुधार आवश्यक है। वे अपनी उन्नति का मार्ग खुद ही प्रशस्त करेगी।[5]

19वीं सदी के अंत में स्त्री शिक्षा के विचार यह है कि इस समय स्त्री शिक्षा पर बात करना भी पाप माना जाता था। स्त्री सिर्फ परिवार के उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए ही थी शिक्षा की कल्पना भी उनके लिए असंभव थी। विवेकानंद का यह मानना था शिक्षा के द्वारा ही स्त्रियों की वर्त्तमान दशा सुधार संभव है जब वे खुद शिक्षित होंगी तब वह खुद अपनी समस्या का हल ढूंढ लेगी तथा अपनी आत्म रक्षा भी कर लेगी। स्वामी विवेकानंद के अनुसार धार्मिक शिक्षा चरित्र निर्माण और ब्रह्मचार्य पालन की शिक्षा स्त्रियों के लिए आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद यह बात सदैव कहा करते हैं कि एक स्त्री को शिक्षित करना राष्ट्र और उसके पूरे परिवार को शिक्षित करना है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार स्त्रियों को सुशील, चरित्रवान निडर आत्म निर्भर और शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में विकसित करना ही स्त्री की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। स्त्री शिक्षा को लेकर स्वामी विवेकानंद के विचार था कि शिक्षा के माध्यम् से स्त्रियों में आत्म विश्वास, आत्म रक्षा आत्म निर्भरता तथा अस्तित्व का बोध का भाव जागे वे खुद पढ़ लिख कर समस्याओं का समाधान स्वयं करें। हालांकि निश्चित ही स्त्रियों की समस्या अनेक है और गंभीर भी है। परंतु ऐसा समस्या भी नहीं है जो शिक्षा से हल नहीं किया जा सकता है।[6]

स्वामी विवेकानंद स्त्री शिक्षा पर इस लिए जोर देते हैं क्योंकि स्त्रियों को मानसिक धरातल पर सशक्त और मजबूत बनाना चाहते थे। स्वामी विवेकानंद का कहना है कि नारियों के मामले में हमारा हस्तक्षेप करने का अधिकार केवल उनमें शिक्षा के प्रचार तक ही सीमित है। स्वामी विवेकानंद राष्ट्र के निर्माण में स्त्री के महत्व को स्वीकार किया है। स्वामीजी चरित्र निर्माण के लिए स्त्रियों के समक्ष सीता के आदर्श चरित्र प्रस्तुत करते हैं। पवित्रता, सहनशीलता और धैर्य का प्रतिमूर्त्ति 'सीता'। स्वामी विवेकानंद अपने समय के पहले ऐसे शिक्षाविद् है जो स्त्री पुरूष की समानता और शिक्षा की बात करते है। स्वामी विवेकानंद ने स्त्री के लिए शिक्षा, समानता, स्वतंत्रता और आत्म निर्भर बनाने की जो कल्पनाएँ की थी आज वह 21वीं सदी में साकार के रूप में है।

सन्दर्भ सूची

1. स्वामी विवेकानंद 2009, मेरा भारत अमर भारत स्वामी ब्रह्मस्थानन्द नागपूर प्रकाशक, पृष्ठ संख्या-47
2. विवेकानंद साहित्य, 1963, भाग-4 कोलकत्ता, अद्वैत आश्रम डिही एण्टाली रोड, पृष्ठ संख्या-297
3. विवेकानंद साहित्य, 1963, भाग-6 कोलकत्ता अद्वैत आश्रम डिही एण्टाली रोड, पृष्ठ संख्या-36
4. विवेकानंद साहित्य, 1963, भाग-8 कोलकत्ता अद्वैत आश्रम डिही एण्टाली रोड, पृष्ठ संख्या-139-140
5. विवेकानंद साहित्य, 1963, भाग-1 कोलकत्ता, अद्वैत आश्रम डिही एण्टाली रोड, पृष्ठ संख्या-297
6. विवेकानंद साहित्य, 1963, भाग-4 कोलकत्ता, अद्वैत आश्रम डिही एण्टाली रोड, पृष्ठ संख्या-268